विश्व हिंदी समाचार
Vishwa Hindi Samachaar
विश्व हिंदी सचिवालय, मॉरीशस का त्रैमासिक सूचना-पत्र

वर्ष: 18 अंक: 66 जून, 2024

हिंदी पुस्तक पठन गतिविधि

8 अप्रैल, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पुस्तक पठन गतिविधि का आयोजन किया गया, जिसमें मॉरीशस के विभिन्न विद्यालयों से आए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों द्वारा हिंदी कहानियों का मौन एवं सस्वर वाचन किया गया।

पृ. 2

एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी - हिंदी गीत एवं ग़ज़ल

30 मई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा महात्मा गांधी संस्थान और इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी - 'हिंदी गीत एवं ग़ज़ल' का आयोजन किया।

पृ. 2-4

सूरीनाम में 'अपनी-अपनी बातें' कार्यक्रम का शुभारम्भ

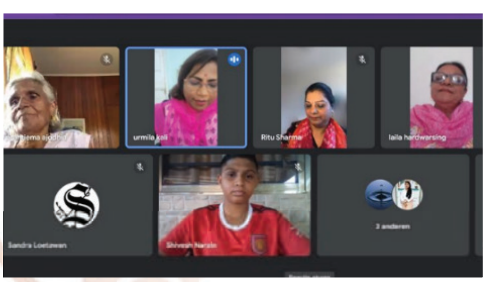

7 अप्रैल, 2024 से सूरीनाम हिंदी परिषद् के साहित्य विभाग, विद्या निवास साहित्य संस्था, सूरीनाम द्वारा एक नई पहल की गई है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी एक साथ अपने-अपने मन की बात, कविता, कहानी या लघुकथा के रूप में रखते हैं। आभासी कार्यक्रम का नाम 'अपनी-अपनी बातें' रखा गया।

पृ. 8

लंदन में अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा तथा सम्मान-समारोह

8 मई, 2024 को भारतीय उच्चायोग, लंदन के सांस्कृतिक विंग नेहरू सेन्टर में कथा यूके एवं हिंदी अकादमी, मुंबई के संयुक्त तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा तथा सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया।

पृ. 7

फ्रांस में 'भारत गौरव सम्मान' से सम्मानित श्री संतोष चौबे

5 जून, 2024 को लक्ज़ेमबर्ग पैलेस, फ्रांस सीनेट, पेरिस में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति युवा संस्थान, जयपुर द्वारा भव्य सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया, जिसमें श्री संतोष चौबे को प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय 'भारत गौरव सम्मान 2024' से अलंकृत किया गया।

पृ. 14

श्रद्धांजलि

15 मई, 2024 को पद्मश्री से अलंकृत लोकप्रिय कथाकार मालती जोशी का निधन हो गया। वे 90 वर्ष की थीं। पचास से अधिक हिंदी और मराठी कथा-संग्रहों की लेखिका मालती जोशी, शिवानी के बाद हिंदी की सबसे लोकप्रिय कथाकार मानी जाती हैं।

24 मई, 2024 को मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ का निधन हुआ। वे हिंदी अध्यापक, डिप्यूटी हेड टीचर, निरीक्षक-परीक्षक, हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस के महामंत्री व मान्य प्रधान और 'सृजन' एवं 'बाल सखा' पत्रिकाओं के प्रधान संपादक रहे।

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

पृ. 15

इस अंक में आगे पढ़ें :

- संगोष्ठी, कार्यशाला, परिचर्चा, प्रतियोगिता, व्याख्यान, पर्व — पृ. 4-11
- आभासी कार्यक्रम — पृ. 11-12
- साक्षात्कार — पृ. 12
- लोकार्पण — पृ. 12-14
- सम्मान एवं पुरस्कार — पृ. 14-15
- श्रद्धांजलि — पृ. 15
- संपादकीय — पृ. 16

ISSN 1694-2485

हिंदी पुस्तक पठन गतिविधि

8 अप्रैल, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा शिक्षा तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय एवं भारतीय उच्चायोग, मॉरीशस के तत्त्वावधान में विश्व पुस्तक दिवस के उपलक्ष्य में हिंदी पुस्तक पठन गतिविधि का आयोजन किया गया, जिसमें मॉरीशस के विभिन्न विद्यालयों से आए माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों (ग्रेड 7, 8 तथा 9) द्वारा हिंदी कहानियों का मौन एवं सस्वर वाचन किया गया।

कार्यक्रम के दौरान महात्मा गांधी संस्थान में आई.सी.सी.आर हिंदी पीठ, डॉ. राज शेखर ने बताया कि सन् 1995 में यूनेस्को द्वारा विश्व पुस्तक दिवस मनाने की शुरुआत की गई थी, क्योंकि पुस्तक ही हमारे जीवन की दशा और दिशा तय करती है। उनके अनुसार कहानी की पुस्तक पढ़ने से व्यक्तित्व का विकास होता है तथा लेखन-शैली में वृद्धि होती है ।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने पुस्तक के पठन के दौरान विराम चिह्नों पर ध्यान देने के महत्त्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने लैंगिक समानता एवं सामाजिक बदलाव से संबंधित स्वरचित कहानी का उल्लेख किया, जो मंजम्मा जोगती के जीवन पर आधारित है, जिन्हें वर्ष 2021 में लोक कला एवं नृत्य के क्षेत्र में विशेष योगदान हेतु पद्मश्री से सम्मानित किया गया था।

मॉरीशस ब्रोडकॉस्टिंग कोर्पोरेशन के डेस्क समन्वयक श्री केसन बधु ने श्रोताओं को कहानी सुनाते समय हाव-भाव पर ध्यान देने का आग्रह किया। उन्होंने शब्दों के उच्चारण पर भी विशेष ध्यान देने के महत्त्व पर बल दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी ने स्वागत संबोधन में कहा - "हिंदी पुस्तक-पठन गतिविधि का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों के मन में हिंदी पुस्तकों के प्रति प्रेम और आकर्षण बढ़ाना, पुस्तक पढ़ने के आनंद से उन्हें परिचित कराना और हिंदी पुस्तक पठन को प्रोत्साहित करना है।"

शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध ने विचार व्यक्त किया कि हिंदी पुस्तकें हमें एक नया अनुभव देती हैं और जीवन को बेहतर बनाने की प्रेरणा देती है।

सार्वजनिक सेवा, प्रशासनिक और संस्थागत परिवर्तन मंत्री, डॉ. अंजीव रामधनी ने कहा कि हिंदी सीखना न सिर्फ़ भाषा का ज्ञान प्राप्त करने का माध्यम है, बल्कि यह हमारी पहचान को सुरक्षित रखने का उचित प्रयास है।

सागरीय अर्थव्यवस्था, समुद्री संसाधन, मत्स्य व्यापार एवं जहाजरानी मंत्री, श्री सुधीर मोधु ने उल्लेख किया कि मॉरीशस में बहुत सारी संस्थाएँ हैं, जो हिंदी के पठन-पाठन में योगदान दे रही हैं।

समारोह के दौरान श्री केसन बधु द्वारा रचित पुस्तक 'हँसी हँसी में हिंदी' का लोकार्पण किया गया। खेल-खेल में हिंदी सीखने और सिखाने के लिए यह पुस्तक उपयोगी है।

इस अवसर पर हिंदी पुस्तक पठन में प्रथम द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र तथा भारतीय उच्चायोग की ओर से पुस्तकें भी भेंट की गईं।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने उपस्थित महानुभावों के प्रति कृतज्ञता-ज्ञापित की। मंच-संचालन विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर द्वारा किया गया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी - हिंदी गीत एवं ग़ज़ल

30 मई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं

प्रौद्योगिकी मंत्रालय और भारतीय उच्चायोग के तत्त्वावधान में तथा महात्मा गांधी संस्थान और इंदिरा गांधी भारतीय सांस्कृतिक केंद्र के सहयोग से एक दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी - 'हिंदी गीत एवं ग़ज़ल' का आयोजन किया।

औद्योगिक विकास, एस.एम.ई. एवं सहकारिता मंत्री, माननीया सुश्री नवीना रामयाद, विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी, अजमेर लेखिका संघ की प्रधाना, डॉ. मधु खण्डेलवाल तथा स्नेहल आर्ट्स एंड फ़ाउंडेशन सोसायटी की अध्यक्षा, श्रीमती कल्पना गवरे द्वारा द्वीप-प्रज्ज्वलन के साथ समारोह का शुभारंभ हुआ।

गीत प्रस्तुति का आरंभ श्रीमती संगीता दीरपोल शर्मा, अध्यापिका (वोकल हिंदुस्तानी), एम.जी.एस.एस., मोका (मॉरीशस) द्वारा 'सुर का सावन आया' नामक गीत से हुआ, जिसमें हारमोनियम पर अक्षय जूरन, की-बोर्ड पर श्री अविनाश रामदहीन, तबले पर श्री अनंत कुमार चत्तू तथा वायलिन पर श्री शविन बिदेसी ने साथ दिया।

विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ.

माधुरी रामधारी ने स्वागत-संबोधन में बताया कि भावों को सुन्दर शब्दों में प्रस्तुत करने के लिए हिंदी गीत एवं ग़ज़ल का बड़ा महत्त्व होता है और हिंदी में बच्चों को सुलाने वाली माँ की लोरियाँ, जनमानस की अभिव्यक्ति करने वाले लोकगीत, नई ऊर्जा का संचार करने वाले देशभक्ति गीत आदि बहुत लोकप्रिय हैं।

शिक्षा, तृतीयक शिक्षा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रालय के स्थायी सचिव, श्री युधिष्ठिर मनबोध ने कहा कि शिक्षा का उद्देश्य बौद्धिक, भावनात्मक, कलात्मक, रचनात्मक और आध्यात्मिक क्षमता का विकास करना है, जो हिंदी गीत और ग़ज़ल के बिना संभव नहीं है।

संगोष्ठी में, स्वर साक्षी प्रोडक्शन एंड फ़ाउंडेशन के संगीत निदेशक श्री अतुल दिवे तथा वैशाली कुर्तादिकर द्वारा सूर्यकांत भालेराव द्वारा लिखित रचना 'घुमड़-घुमड़ आए बदरा' का युगल गायन किया गया।

भारतीय उप-उच्चायुक्त, श्री विमर्श आर्यन ने संगीत के सहारे भाषा के प्रयोग में निरंतरता लाने का आग्रह किया।

गायताँ रेनाल स्टेट कॉलिज (मॉरीशस) की छात्राओं ने 'हमर देख सोभेला' (सोहर) प्रस्तुत किया। नृत्य निर्देशन श्रीमती रेखा एवं श्रीमती चित्रा दीरपोल ने तथा गायन श्रीमती संगीता दीरपोल ने किया। की-बोर्ड पर अश्विन जोधन, ढोलक पर श्री अनंत कुमार चत्तू तथा बाँसुरी पर श्री नीलेश कुमार बक्टोवर ने साथ दिया।

औद्योगिक विकास, एस.एम.ई. एवं सहकारिता मंत्री, माननीया सुश्री नवीना रामयाद ने विचार व्यक्त किया कि गीत और ग़ज़ल के माध्यम से हम सरलतापूर्वक अपना संदेश या भाव प्रस्तुत कर सकते हैं।

कला एवं सांस्कृतिक धरोहर मंत्री, माननीय श्री अविनाश तिलक ने रेखांकित किया कि संगीत व्यक्तिगत स्तर पर सभी के लिए प्रेरणा का काम करता है।

इस अवसर पर, डॉ. मधु खंडेलवाल तथा अजमेर लेखिका संघ की सदस्याएँ (भारत) डॉ. नंदिता रवि चौहान, सुनीता जैन 'रूपम', शालिनी अग्रवाल 'चकोर', डॉ. सुनीता पचौरी तथा डॉ. अनुपमा वर्मा द्वारा 'कहता ये पल खुद से निकल' नामक मनमोहक गीत प्रस्तुत किया गया।

शुभ लगन मंडली, मॉरीशस के सदस्यों द्वारा 'बिहार से पूर्वज मोरिस्वा में अयलन' तथा शारदा गीत गवाय मंडली, मॉरीशस के सदस्यों द्वारा 'सोने के लोटा गंगाजल पानी'

नामक गीत प्रस्तुत किया गया। इसके पश्चात्, एमजीआई/आरटीआई के हिंदुस्तानी गायन के व्याख्याता, श्री सुतीक्ष्ण शर्मा मंगरू ने मृदुल कीर्ति की रचना 'केसरी हिंदी उगाओ', डॉ. वर्षारानी बिसेसर दुलूआ ने श्री राजेंद्र अरुण द्वारा रचित 'हिंदी बने विश्व की भाषा', श्रीमती कल्पना गवरे (भारत) ने सी.सी. आर.टी. नई दिल्ली द्वारा रचित गीत तथा एक कठपुतली खेल - 'हिंद देश के निवासी' प्रस्तुत किया। इसके उपरांत भारत से पधारे श्री मकरंद गोंधली ने 'मुसाफ़िर' नामक एक कथा प्रस्तुत की।

विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन में कहा कि संगीत हमारे जीवन की गति, यति, लय और ताल है। भाषा, संस्कृति और गीत-संगीत हमारे जीवन का अभिन्न अंग है, जो न केवल हमारा मनोरंजन करता है, बल्कि सीखने में आनंद को उजागर करता है। विश्व हिंदी सचिवालय के वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने मंच-संचालन किया।

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

संगोष्ठी, कार्यशाला, परिचर्चा, प्रतियोगिता, व्याख्यान, पर्व

मैसूर में तीन दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी

3-5 जून, 2024 को जीट मैसूर में तीन दिवसीय राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन हुआ। सुश्री मीनाक्षी जैन, पाठ्यक्रम निदेशक एवं उपायुक्त, आंचलिक शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, मैसूर ने सबका स्वागत करते हुए संगोष्ठी के महत्त्व पर प्रकाश डाला। श्री संजीव सक्सेना, प्रभारी सहायक निदेशक (राजभाषा), केंद्रीय विद्यालय संगठन (मु.) ने संगोष्ठी के उद्देश्य से अवगत कराया। मुख्य अतिथि डॉ. (प्रोफ़ेसर) एम. पुष्पावती, निदेशक, अखिल भारतीय वात एवं श्रवण संस्थान, मैसूर ने अपने संस्थान का परिचय देते हुए, हिंदी के राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय महत्त्व पर भावपूर्ण प्रस्तुति दी। डॉ. पंकज द्विवेदी ने राजभाषा नीति और उसके अनुपालन की चर्चा की।

4 जून, 2024 को द्वितीय दिवस के सत्रों का आयोजन हुआ, जिसमें अतिथि वक्ता डॉ. नारायण चौधरी ने अनुवादकों के लिए आवश्यक ई-टूल्स के उपयोग के बारे में व्याख्यान दिया। उन्होंने अनुवादकों के लिए ई-टूल्स की आवश्यकता को उजागर किया। श्री संजीव सक्सेना ने राजभाषा समिति की संशोधित निरीक्षण प्रश्नावली को भरने की तकनीक का विवरण दिया। श्री धर्मेश कुमार सिंह ने हिंदी भाषा प्रयोग से जुड़े विभिन्न ई-टूल्स का व्यावहारिक विश्लेषण प्रस्तुत किया।

तृतीय दिवस को, प्रथम सत्र में, श्रीमती निशा गुप्ता, हिंदी अनुवादक, केंद्रीय विद्यालय संगठन (मु.) ने क्षेत्रीय कार्यालयों और अधीनस्थ विद्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन के बारे में विस्तृत जानकारी प्रदान की। श्री दिनकर प्रसाद, भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर ने अनुवाद के क्षेत्र में अपने विचारों को साझा किया और अनुवाद की मूलरूपता बनाए रखने की महत्ता पर चर्चा की।

द्वितीय सत्र में, संयुक्त आयुक्त (कार्मिक), केंद्रीय विद्यालय संगठन, नई दिल्ली ने हिंदी में काम करने के साथ-साथ उसकी गुणवत्ता पर ज़्यादा ध्यान देने के लिए कहा। समापन समारोह में, सभी प्रतिभागियों को प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए और उन्हें अपने कार्यालयों में राजभाषा नीति का पालन करने का आग्रह किया गया।

साभार : केंद्रीय विद्यालय संगठन

लखनऊ में तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिंदी संगोष्ठी

3-5 जून, 2024 को सीएसआईआर, भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश द्वारा तीन दिवसीय अंतर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक हिंदी संगोष्ठी हुई, जिसका विषय स्वास्थ्य एवं पर्यावरण : वर्तमान चुनौतियाँ एवं भविष्य की संभावाएँ" रखा गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री अरुण सिंगल, राष्ट्रीय अभिलेखागार के निदेशक तथा विशिष्ट अतिथि निदेशक, भास्कर नारायण उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अध्यक्ष वी.वी शर्मा ने स्वागत संबोधन करके मुख्य अतिथि तथा उपस्थित छात्र-छात्राओं एवं वैज्ञानिकों का स्वागत किया। उन्होंने प्रकृति में हो रही वर्तमान उथल-पुथल पर अपने विचार साझा किए। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. आलोक कुमार पाण्डेय ने बताया कि पिछले कुछ सालों में भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान ने जनसामान्य से जुड़े विभिन्न विषयों पर हिंदी में 5 राष्ट्रीय और 2 अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का आयोजन कराया है। संगोष्ठी को चार सत्रों में विभाजित किया गया, जैसे - अन्न की दैनिक जीवन में उपयोगिता, पेय जल संरक्षण, एआई का उपयोग तथा पर्यावरणीय समस्याएँ। उन्होंने हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए विज्ञान की शब्दावलियों को हिंदी में बताया तथा विज्ञानी भाषा में प्रयोग में आने वाले कठिन शब्दों को हिंदी भाषा में सरलता के साथ समझाने पर ज़ोर दिया। उन्होंने विज्ञान को हिंदी भाषा के माध्यम से जन-जन तक पहुँचाने की बात पर प्रकाश डाला। संगोष्ठी में संस्थान की राजभाषा पत्रिका 'विश्व विज्ञान संदेश' का विमोचन किया गया। इस पत्रिका में संस्थान के वैज्ञानिकों, शोध-छात्रों तथा कार्मिकों के अंदर छिपी हिंदी-लेखन प्रतिभा को प्रदर्शित किया

जाता है। पत्रिका के माध्यम से विज्ञान से जुड़े नवीन विचार जन-जन तक हिंदी भाषा में सुलभता से पहुँचते हैं।

साभार : भारतीय विषविज्ञान अनुसंधान संस्थान, लखनऊ, उत्तर प्रदेश का यूट्यूब चैनल

इंदौर में आयोजित हुआ ऐतिहासिक उपन्यास-लेखन पर संगोष्ठी

'वृहत्काय महानायक आधारित उपन्यास : चुनौतियाँ एवं संकट' विषय पर गहन चर्चा

6 अप्रैल, 2024 को साहित्य अकादेमी एवं श्रीमध्यभारत हिंदी साहित्य समिति, इंदौर के संयुक्त तत्त्वावधान में इंदौर स्थित हिंदी साहित्य समिति सभागार में एक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी का विषय था – 'ऐतिहासिक वृहत्काय महानायक आधारित उपन्यास-लेखन : चुनौतियाँ एवं संकट'।

कार्यक्रम का आरंभ सहायक संपादक साहित्य अकादेमी, अजय कुमार शर्मा ने किया। तत्पश्चात्, प्रसिद्ध साहित्यकार और संपादक गौरीश मिश्र ने विषय प्रवर्तन करते हुए उपन्यास-लेखन में व्याप्त विभिन्न चुनौतियों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता विवेकानंद पांडेय ने की, जिनके मार्गदर्शन में उपस्थित साहित्यकारों ने ऐतिहासिक उपन्यासों में यथार्थता बनाए रखने और पात्रों के सामाजिक-सांस्कृतिक संदर्भ और शोध की महत्ता पर चर्चा की। शरद पगारे, ध्यानचंद्र गोस्वामी और श्रीमद्भानु मिश्र ने भी अपने विचार रखे और सुझाव दिए। उल्लेखनीय है कि संगोष्ठी में वक्ताओं ने इस बात पर विशेष ज़ोर दिया कि जब उपन्यास का विषय 'वृहत्काय महानायक' जैसे ऐतिहासिक चरित्र हों, तब लेखकों को तथ्य और कल्पना के बीच संतुलन बनाकर एक विश्वसनीय रचना प्रस्तुत करनी होती है। इस संदर्भ में उन्होंने लेखकों के लिए शोध और संदर्भ सामग्री की उपलब्धता को भी आवश्यक बताया।

संगोष्ठी के बाद रचना-पाठ सत्र का आयोजन किया गया, जिसमें कवि और कथाकारों ने अपनी प्रस्तुतियाँ दीं। कविताएँ प्रस्तुत कीं आभा शर्मा एवं बिलासी जैन ने, कहानी-पाठ में तारिक खान, अनुप दुबे और अविनीत सिंह ने अपनी कलम की छाप दिखाई। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रकाशनंदन ने की व संचालन संयोजन जीतेन्द्र जौहर ने किया। कार्यक्रम का समापन श्रीमध्यभारत हिंदी साहित्य समिति के अध्यक्ष अर्पित जावेरीकर द्वारा धन्यवाद-ज्ञापन के साथ हुआ।

साभार : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की आधिकारिक वेबसाइट

गोवा में हिंदी कार्यशाला

12 जून, 2024 को राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, गोवा हिंदी समिति ने एससीईआरटी, सम्मेलन कक्ष, पोरवोरिम में हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया। इस कार्यशाला में एनआईसी गोवा राज्य केंद्र, ज़िला केंद्रों के अधिकारियों और कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला में कार्यालय की गतिविधियों में हिंदी के प्रयोग पर वार्षिक कार्यक्रम 2024-25 पर चर्चा हुई। हिंदी की ध्वन्यात्मक टाइपिंग के लिए अनुवादिनी, कंठस्थ 2.0, माइक्रोसॉफ़्ट इंडिक भाषा इनपुट टूल 3.0 जैसे हिंदी अनुवाद टूल का प्रदर्शन सुश्री कीर्ति रानी, वैज्ञानिक 'बी' द्वारा किया गया। सभी एजेंडा बिंदुओं पर चर्चा की गई और राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी और अतिरिक्त राज्य सूचना विज्ञान अधिकारी ने इसका अनुपालन करने और दिन-प्रतिदिन के कार्यालय कार्यों में हिंदी भाषा के उपयोग में सुधार करने के लिए अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। एनआईसी गोवा हिंदी समिति, एनआईसी गोवा के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों के सहयोग से, राजभाषा उपयोग के उद्देश्यों को प्राप्त करने के लिए प्रतिबद्ध है।

साभार : राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केंद्र, गोवा हिंदी समिति की आधिकारिक वेबसाइट

नई दिल्ली में राजभाषा सम्मेलन एवं कवि-गोष्ठी

21 मई, 2024 को अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली द्वारा राजभाषा सम्मेलन एवं कवि-गोष्ठी का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि पद्मश्री प्रोफ़ेसर अशोक चक्रधर थे । कवयित्री सुश्री मोनिका देहलवी तथा राजेश चेतन उपस्थित रहे। अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली की निदेशिका श्रीमती तनुजा मनोज ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। इस सम्मेलन में राष्ट्रीय तथा अंतर्राष्ट्रीय स्तर के विद्वतजन उपस्थित रहे। राजभाषा सम्मेलन एवं कवि-गोष्ठी का मुख्य उद्देश्य राजभाषा से जुड़े विभिन्न पहलुओं को प्रकाश में लाना है, जिससे विचारशील चर्चाएँ शुरू हो सके एवं नए विचारों को प्रोत्साहन मिले। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि, विशिष्ट अतिथि तथा अन्य वक्ताओं का संस्थान की निदेशिका द्वारा शॉल तथा पुष्पगुच्छ से स्वागत किया गया।

कार्यक्रम के आरंभ में दीप-प्रज्जवलन के साथ धनवंतरी वंदना गीत भी प्रस्तुत किया गया। कार्यक्रम का संक्षिप्त परिचय देते हुए संस्थान के हिंदी अधिकारी श्री गौरव ने बताया कि अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान हमेशा से ही राजभाषा हिंदी के प्रगामी प्रयोग को लेकर प्रतिबद्ध रहा है। संस्थान में प्रत्येक तिमाही में एक हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है, जिससे संस्थान में कार्य करने वाले सभी कार्मिकों को हिंदी में काम करने के लिए प्रेरणा एवं प्रोत्साहन मिले। उन्होंने राजभाषा हिंदी के तीन स्तंभ - प्रेरणा, पुरस्कार और प्रोत्साहन का भी उल्लेख किया। संस्थान की वेबसाइट द्विभाषी (हिंदी एवं अंग्रेज़ी) दोनों भाषाओं में उपलब्ध है। सभी कवियों ने हिंदी भाषा की बारीकियों, उपलब्धियों और महत्त्व

को बताते हुए अपनी सुंदर कविताओं से उपस्थित श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

साभार : अखिल भारतीय आयुर्वेद संस्थान, नई दिल्ली का यूट्यूब चैनल

पुणे में हिंदी कार्यशाला

23 अप्रैल, 2024 को सीएसआईआर - एनसीएल द्वारा 'कंठस्थ अनुवाद सॉफ़्टवेयर - जानकारी एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण' विषय पर संयुक्त हिंदी कार्यशाला का आयोजन एनसीएल के स्टाफ़ सदस्यों एवं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे के सभी सदस्य कार्यालयों के लिए किया गया। मुख्य व्याख्याता तथा प्रशिक्षक के रूप में डॉ. शशि पाल सिंह, संयुक्त निदेशक, एप्लाइड आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस (एआई) ग्रुप, प्रगत संगणक विकास केंद्र (सी-डैक), पुणे, डॉ. आशीष लेले, निदेशक एवं अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (का.-2), पुणे, श्रीमती पूजा कुलकर्णी, प्रशा. नियंत्रक, श्री कौशल कुमार, प्रशा. अधिकारी, डॉ. (श्रीमती) स्वाति चढ्ढा, हिंदी अधिकारी एवं सचिव - नराकास (का.-2), पुणे उपस्थित थे। संस्थान एवं नराकास के सदस्य कार्यालयों से लगभग 120 अधिकारियों/कर्मचारियों ने कार्यशाला में प्रतिभागिता की। संचालन डॉ. (श्रीमती) स्वाति चढ्ढा द्वारा किया गया।

कार्यशाला के आरंभ में डॉ. शशि पाल सिंह का स्वागत पौधा देकर किया गया। तत्पश्चात् डॉ. (श्रीमती) स्वाति चढ्ढा द्वारा कार्यशाला की प्रस्तावना प्रस्तुत की गई। उन्होंने बताया कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार समय-समय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन करना आवश्यक है, जिसका प्रमुख उद्देश्य राजभाषा हिंदी के प्रयोग में आ रही कठिनाई का समाधान करना और राजभाषा हिंदी के प्रयोग का प्रचार-प्रसार करना है।

डॉ. आशीष लेले, ने अपने संबोधन में कहा कि भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा सी-डैक के माध्यम से निर्मित 'मेमोरी आधारित टूल- कंठस्थ' गूगल ट्रांसलेशन से एकदम अलग है। यह टूल पूरी तरह स्वदेशी है और राजभाषा हिंदी के विकास और कार्यान्वयन में अत्यंत ही उपयोगी है।

डॉ. स्वाति चढ्ढा ने मुख्य व्याख्याता डॉ. शशि पाल सिंह का परिचय दिया। डॉ. शशि पाल सिंह ने 'कंठस्थ अनुवाद सोफ़्टवेयर - जानकारी एवं प्रायोगिक प्रशिक्षण' विषय पर महत्त्वपूर्ण जानकारी प्रदान की एवं इस सोफ़्टवेयर का उपयोग कैसे किया जाए, इस विषय में बताया। उन्होंने सोफ़्टवेयर की विशेषताओं से भी अवगत कराया। कार्यशाला में उपस्थित सभी अधिकारियों व कर्मचारियों द्वारा पूछे गए प्रश्नों का उन्होंने निराकरण किया।

कार्यक्रम के अंत में डॉ. स्वाति चढ्ढा द्वारा डॉ. शशि पाल सिंह को स्मृति चिह्न भेंट किया गया। उन्होंने कार्यशाला में उत्साहपूर्वक भाग लेने के लिए एनसीएल एवं नराकास सदस्य कार्यालयों से उपस्थित सभी अधिकारियों/कर्मचारियों एवं मुख्य व्याख्याता का आभार व्यक्त किया।

साभार : सीएसआईआर – एनसीएल की औपचारिक वेबसाइट

पाँच दिवसीय कार्यशाला

25 से 29 मई, 2024 तक कर्नाटक के हिंदी योद्धा नागप्पा को स्मरण करते हुए केंद्रीय हिंदी संस्थान, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार ने पहली बार भारतीय भाषाओं की समृद्धि की योजना को धरातल पर उतारने के उद्देश्य से मैसूर केंद्र पर कन्नड़ हिंदी के विद्वानों की टीम की पाँच दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया। ख्याति प्राप्त विद्वान जनों की उपस्थिति में कन्नड़ हिंदी पर्यायवाची शब्दकोश निर्माण संबंधी यह प्रथम कार्यशाला हुई। कार्यशाला में साहित्यिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, पुरातात्विक सामाजिक हिंदी कन्नड़ के समानान्तरीय पर्यायवाची शब्दों के कोश का उद्देश्य भारतीय भाषाओं की एकरूपता अर्थात् 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' को भाषायी दृष्टि से साकार करना तथा सबको जोड़कर देखना है। अपने तरह की इस पहली कार्यशाला में आए हुए विद्वानों का स्वागत क्षेत्रीय निदेशक डॉ. योगेन्द्र मिश्र ने पुष्पगुच्छ देकर किया।

डॉ. मिश्र ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि भारतीय भाषाओं के विकास से ही हमारी बौद्धिक चेतना का विकास जुड़ा है। कन्नड़ हिंदी पर्यायवाची कोश से कर्नाटक की नई पीढ़ी लाभान्वित होगी। सभी भाषाओं का उद्गम संस्कृत है, जननी है देव भाषा। भारतीय भाषाओं की स्थिति, ध्वनि, उच्चारण में भिन्नता होने से भाषायी भेद को मिटाया जा सकता है। इससे सामाजिक समरसता को बढ़ावा मिलेगा। काशी तमिल संगम हमारे समक्ष उदाहरण है। इस कोश निर्माण से भविष्य की अपार संभावनाएँ हैं।

कार्यशाला में केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा से विद्वानों की टीम में प्रोफ़ेसर टी. आर. भट्ट, कर्नाटक विश्वविद्यालय धारवाड़, डॉ. श्रीधर हेगड़े, मैंगलुरू विश्वविद्यालय, डॉ. उमा हेगड़े, डॉ. मनोरंजनी कोटेमने, श्री परमेश्वर हेगड़े, डॉ. परमान सिंह हिंदी कन्नड़ के विशेषज्ञ के अतिरिक्त केंद्र के क्षेत्रीय निदेशक डॉ. योगेन्द्र मिश्र, डॉ. रणजीत भारती आदि सहभागी रहे।

साभार : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की आधिकारिक वेबसाइट

लंदन में अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा तथा सम्मान-समारोह

8 मई, 2024 को भारतीय उच्चायोग, लंदन के सांस्कृतिक विंग नेहरू सेन्टर में कथा यूके एवं हिंदी अकादमी, मुंबई के संयुक्त तत्त्वावधान में अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक परिचर्चा तथा सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि श्री दीपक चौधरी, मंत्री समन्वय, भारतीय उच्चायोग, लंदन ने भारत और ब्रिटेन की समस्त साहित्यिक विभूतियों का स्वागत किया और इस बात पर प्रसन्नता व्यक्त की कि ब्रिटेन की साहित्यिक संस्थाएँ कार्यक्रमों का निरंतर आयोजन कर रही हैं। उन्होंने सूचना दी कि भारतीय उच्चायोग भी एक साहित्यिक आयोजन करने की योजना बना रहा है। कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री विरेन्द्र शर्मा, माननीय सांसद, लंदन ने बताया कि हालाँकि संसद में व्हिप जारी किया गया था कि सभी सांसदों की उपस्थिति वहाँ अनिवार्य है, फिर भी वे इस महत्त्वपूर्ण कार्यक्रम के लिए पहुँचने का प्रयास करते रहे और अंततः सफल भी हुए। विरेन्द्र जी ने सभी सम्मानित विभूतियों को बधाई देते हुए कथा यूके को निमंत्रण दिया कि अगला कार्यक्रम ब्रिटेन की संसद के हाउस ऑफ़ कॉमन्स में आयोजित किया जाए। कार्यक्रम की मेज़बान काउंसलर ज़किया ज़ुबैरी ने सम्मानित विभूतियों को बधाई दी और उनकी उपलब्धियों के बारे में बात की। डॉ. स्नेहिल पिन्टो (मुंबई) ने अपने 150 स्कूलों के बारे में उपस्थित श्रोताओं को जानकारी दी। टीवी एवं फ़िल्म कलाकार सुश्री आर्या शर्मा ने बताया कि फ़िल्मों में संवाद रोमन हिंदी में लिखकर दिए जाते हैं। मगर वे उन संवादों को पहले देवनागरी में अपने हाथों से लिखती हैं और उसके बाद याद करती हैं। ऐसा करने से शब्दों में निहित भावों को वे बेहतर तरीके से समझ पाती हैं। उन्होंने बताया कि नेहरू सेन्टर में वे अंग्रेज़ी और हिंदी के नाटकों में अभिनय कर चुकी हैं। हिंदी अकादमी मुंबई के संस्थापक अध्यक्ष, डॉ. प्रमोद पांडेय ने अपनी संस्था और कथा यूके के आयोजनों एवं कार्यक्रमों के विषय में एक पॉवर पोंइट प्रस्तुति की और प्रत्येक सम्मानित हस्ती के बारे में श्रोताओं को जानकारी प्रदान की।

भारत के सुप्रसिद्ध साहित्यकार, श्री हरि भटनागर को साहित्य एवं पत्रकारिता के क्षेत्र में, गीतांजलि बहुभाषीय साहित्य समुदाय के संस्थापक महासचिव, डॉ. कृष्ण कुमार को दीर्घकालीन साहित्य एवं हिंदी सेवा हेतु, वरिष्ठ साहित्यकार, डॉ. निखिल कौशिक को साहित्य तथा सिनेमा जगत में, लंदन के मीडियाकर्मी, श्री परवेज़ आलम को मीडिया के क्षेत्र में तथा लंदन के सुप्रसिद्ध संगीतकार, श्री शमील चौहान को साहित्य, संगीत एवं गायन के क्षेत्र में दीर्घकालीन सेवा हेतु 'जीवन गौरव सम्मान' से अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम की सफलता में युवा पीढ़ी के साहित्यकारों आशीष मिश्रा एवं आशुतोष कुमार का योगदान रहा। भोपाल (भारत) के कथाकार श्री हरि भटनागर, बर्मिंघम के डॉ. कृष्ण कुमार, वेल्स के डॉ. निखिल कौशिक, लंदन के श्री परवेज़ आलम, डॉ. स्नेहिल पिन्टो एवं श्रीमती सिद्दिधा मोरे (मुंबई), डॉ. जयंत कर शर्मा (ओड़िसा) एवं आर्या शर्मा को उनकी उपलब्धियों के लिए सम्मानित किया गया। श्रीमती नंदिता साहू, हिंदी अधिकारी, भारतीय उच्चायोग, लंदन, डॉ. अरुणा अजितसरिया एम.बी.ई., मनमोहन गुप्ता, राष्ट्र किंकर आदि ने अपनी उपस्थिति से कार्यक्रम को गरिमा प्रदान की।

साभार : श्री तेजेंद्र शर्मा का फ़ेसबुक पेज

'विदेश में हिंदी पत्रकारिता' का लोकार्पण और परिचर्चा

30 मई, 2024 को इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र, कलानिधि प्रभाग द्वारा हिंदी पत्रकारिता दिवस के अवसर पर डॉ. जवाहर कर्नावट की पुस्तक 'विदेश में हिंदी पत्रकारिता' के लोकार्पण और परिचर्चा का आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि राज्यसभा के उपसभापति माननीय श्री हरिवंश जी ने हिंदी पत्रकारिता पर गहन प्रकाश डाला। उन्होंने पुस्तक में लिखित कई अहम बिंदुओं पर भी चर्चा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के अध्यक्ष श्री राम बहादुर राय ने पुस्तक में लिखित सिंगापुर और नॉर्वे का उल्लेख करते हुए कई अहम बिंदुओं को संक्षेप में बताया। विशिष्ट अतिथि माधवराव सप्रे संग्रहालय के संस्थापक विजय दत्त श्रीधर ने हिंदी पत्रकारिता के सफ़र और भविष्य के बारे में चर्चा की। इससे पहले वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी ने भी पुस्तक की प्रशंसा की। लेखिका श्रीमती अलका सिन्हा ने पुस्तक में लिखित जानकारियों को उपयोगी बताया। लेखक श्री जवाहर कर्नावट ने बताया कि पुस्तक में 27 देशों के 120 वर्षों की हिंदी पत्रकारिता के शोध को शामिल किया गया है। इसमें हिंदी में प्रकाशित हुई 150 से अधिक दुर्लभ पत्र-पत्रिकाओं का अनूठा संकलन है। कलानिधि विभागाध्यक्ष और डीन (प्रशासन) प्रो. रमेश चन्द्र गौड़ ने सभी अतिथियों का स्वागत एवं परिचय दिया।

साभार : इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र का फ़ेसबुक पेज

अबू धाबी में अंतर-भवन हिंदी काव्य प्रतियोगिता

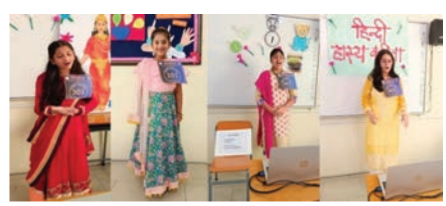

25 मई, 2024 को बेहरीन इंडियन स्कूल के छात्रों ने अबू धाबी के एक प्राइवेट इंटरनेशनल स्कूल द्वारा आयोजित अंतर-भवन हिंदी काव्य-प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। इस कार्यक्रम में आठ भवन स्कूलों के

प्रतिभागियों ने भाग लिया और चार श्रेणियों में हिंदी कविता की सुंदरता और विविधता का प्रदर्शन किया। छठी कक्षा की ईशा आशिक ने पिता को समर्पित अपने मार्मिक काव्य-पाठ से प्रथम स्थान प्राप्त किया। नौवीं कक्षा की माहिका चावला ने हास्य कविता वर्ग में अपनी हास्य प्रस्तुति से प्रथम स्थान प्राप्त किया। छोटी कक्षाओं में, कक्षा 1-2 की मृधिनी माधवन और कक्षा 3-5 की रिआना वशिष्ठ ने अपने भावपूर्ण और आकर्षक काव्य-पाठ से निर्णायकों को प्रभावित करते हुए चौथा स्थान प्राप्त किया। यह प्रतियोगिता उल्लेखनीय रूप से सफल रही और छात्रों में हिंदी साहित्य के प्रति प्रेम का संचार हुआ। विद्यालय के निदेशक श्री हिमांशु वर्मा और श्रीमती ऋतु वर्मा, प्रधानाचार्य साजी जैकब और उप-प्रधानाचार्य डॉ. प्रीत कमल भटनागर ने छात्रों की उपलब्धियों की खूब सराहना की।

साभार : बेहरीन इंडियन स्कूल की औपचारिक वेबसाइट

सूरीनाम में ‘अपनी-अपनी बातें’ कार्यक्रम का शुभारम्भ

7 अप्रैल, 2024 से सूरीनाम हिंदी परिषद् के साहित्य विभाग, विद्या निवास साहित्य संस्था, सूरीनाम द्वारा एक नई पहल की गई है, जिसमें शिक्षक और विद्यार्थी एक साथ अपने-अपने मन की बात, कविता, कहानी या लघुकथा के रूप में रखते हैं। आभासी कार्यक्रम का नाम ‘अपनी-अपनी बातें’ रखा गया। इसका लक्ष्य है हिंदी बोलने और लिखने के कौशल को बढ़ावा देना और अपने देश और लोगों के बारे में कुछ नई जानकारी प्राप्त करना। यह कार्यक्रम मॉरीशस में विश्व हिंदी सचिवालय द्वारा आयोजित ‘हिंदी में अभिव्यक्ति’ आभासी कार्यक्रम से प्रेरित है। इस कार्यक्रम में वक्ता अपने देश के किसी भी क्षेत्र के बारे में बात कर सकते हैं, अपने आस-पास के किसी विशेष व्यक्ति के बारे में या तो अपने बारे में चर्चा कर सकते हैं।

श्रीमती उर्मिला देवी काली ने समय की महत्ता पर बात की। श्रीमती शुशान्तनी रघुबीर ने अपने आजा पंडित रामदेव रघुबीर का जीवन परिचय दिया। नारायण शिवेश ने अपने शौक के बारे में बताया। अध्यापिका प्रहतीमा अयोध्या ने कहा कि “हमें अपनी सरनामी भाषा को बचाना है, नहीं तो 50 साल बाद यह लुप्त हो जाएगी।” कारमेन सोमई–जानकी ने कहा कि अपने गाँव में हिंदी की पढ़ाई के संबंध में उन्होंने बहुत मेहनत की है। नम्रता बोहोरी ने अपनी दादी और अपने परिवार का परिचय दिया।

इस कार्यक्रम की अध्यक्षा डॉ. ऋतु शर्मा नन्नन पांडे ने इस कार्यक्रम की सराहना की और आगे भी ऐसे कार्यक्रमों के आयोजन का प्रोत्साहन दिया। अंत में सूरीनाम हिंदी परिषद् के अध्यक्ष श्री परमसुख सत्यानन्द ने धन्यवाद-ज्ञापन किया। जून 2024 में इस कार्यक्रम की दूसरी श्रृंखला का आयोजन हुआ।

साभार : सूरीनाम हिंदी परिषद् का फ़ेसबुक पेज

नई दिल्ली में व्याख्यान

2 मई, 2024 को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली द्वारा ‘नए दौर के तकनीकी नवाचार और राजभाषा हिंदी’ विषय पर व्याख्यान डॉ. बी.पी. पाल सभागार में संपन्न हुआ। समारोह की अध्यक्षता भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के निदेशक, डॉ. अशोक कुमार सिंह ने की। मुख्य अतिथि श्री बालेंदु शर्मा दाधीच, निदेशक, स्थानीय भाषाएँ और सुगम्यता, माइक्रोसॉफ़्ट इंदिया रहे। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप-प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। इस अवसर पर संस्थान द्वारा प्रकाशित ‘पूसा सुरभि’ पत्रिका के वर्तमान अंक का लोकार्पण हुआ।

साभार : श्री बालेंदु शर्मा दाधीच का फ़ेसबुक पेज

कनाडा में ‘एक दोपहर साहित्यकार/प्रकाशक डॉ. संजीव कुमार के नाम’

11 मई, 2024 को हिंदी राइटर्स गिल्ड कनाडा के तत्त्वावधान में कार्यक्रम ‘एक दोपहर साहित्यकार/प्रकाशक डॉ. संजीव कुमार के नाम’ का आयोजन किया गया। पहला सत्र संजीव जी पर केंद्रित रहा और दूसरा सत्र मातृत्व दिवस को समर्पित रहा। डॉ. संजीव कुमार ‘अनुस्वार’ पत्रिका के मुख्य संपादक हैं और उन्होंने साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान दिया है। वे एक प्रतिष्ठित लेखक, कवि और साहित्यकार हैं। वे लेखक के साथ-साथ प्रकाशक भी हैं। कार्यक्रम का प्रारम्भ गिल्ड की संस्थापक सदस्या डॉ. शैलजा सक्सेना द्वारा डॉ. संजीव कुमार के स्वागत से हुआ। वरिष्ठ सदस्य विक्रांत जी व शैलजा जी द्वारा संजीव जी को शाल पहना कर सम्मानित किया गया। शैलजा जी ने संजीव जी व उनके द्वारा रचित साहित्यिक गतिविधियों की विस्तृत जानकारी से श्रोताओं को अवगत कराया। तत्पश्चात् शैलजा जी ने डॉ. संजीव से प्रश्नोत्तरी सत्र में उनकी रचनाधर्मिता पर बात की। लेखक व प्रकाशक के बीच संबंधों को लेकर,उपस्थित कवियों व लेखकों द्वारा किए गए प्रश्नों पर विस्तार से सार्थक चर्चा हुई। सभी के अनुरोध पर संजीव जी ने अपनी कुछ कविताएँ भी सुनाई, जिन्हें खूब पसंद किया गया। पहले सत्र के अंत में डॉ. संजीव ने अपनी संस्था की ओर से डॉ. शैलजा की साहित्यिक उपलब्धियों पर उन्हें बीपी ए फ़ाउंडेशन और इंडियानेट बुक्स की ओर से शाल व ‘काली चरण मिश्र साहित्य भूषण सम्मान’ दिया। दूसरे सत्र में कवि-सम्मेलन हुआ, जिसका संचालन योगेश ममगाईं ने किया।

साभार : हिंदी राइटर्स गिल्डस कनाडा का फ़ेसबुक पेज

(योगेश ममगाईं की रिपोर्ट)

झारखंड में रश्मिरथी पर्व

26 जून, 2024 को नेतरहाट आवासीय विद्यालय, झारखंड में राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की 50वीं पुण्यस्मृति वर्ष के पावन अवसर पर 'रश्मिरथी पर्व' का भव्य आयोजन किया गया। इसके अंतर्गत नेतरहाट आवासीय विद्यालय, झारखंड के विद्यार्थियों द्वारा 'रश्मिरथी खंडकाव्य का सामूहिक सस्वर-पाठ एवं 'दिनकर साहित्य पर आधारित अंत्याक्षरी' हुई।

झारखंड चैप्टर के स्पीक मैके अध्यक्ष एवं झारखंड के चीफ़ कन्ज़र्वेटिव पदाधिकारी सिद्धार्थ त्रिपाठी ने कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' की कविताएँ भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय देश के कोने-कोने में गौरव के साथ पढ़ी जाती थी। उनकी ओजस्वी वाणी आज़ादी की लड़ाई में सर्वस्व न्योछावर करने के लिए प्रेरित करती थी। फ़िल्म निर्माता एवं एडीटर असीम सिन्हा ने इस अवसर पर कहा कि राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास एवं राष्ट्रकवि 'दिनकर' प्रतिष्ठान साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक उत्थान के लिए दिनकर के विचारों को जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रतिबद्ध है। दिनकर के अध्येता गौतम चौधरी ने कहा कि दिनकर सार्वभौम सत्य के कवि थे। वाटर बैंक के अध्यक्ष साकेत कुमार ने कहा कि राष्ट्रकवि दिनकर की 'रश्मिरथी' बेहद लोकप्रिय एवं उपयोगी है। 'रश्मिरथी पर्व' राष्ट्रकवि रामधारी सिंह 'दिनकर' स्मृति न्यास एवं राष्ट्रकवि 'दिनकर' प्रतिष्ठान ने संयुक्त रूप से किया। इस 'रश्मिरथी पर्व' को सफल बनाने में नेतरहाट आवासीय विद्यालय के गणित के शिक्षक अभिषेक मिश्रा एवं हिंदी के शिक्षक नागेंद्र मंडल ने अहम भूमिका निभाई।

साभार : प्रभात खबर

साहित्यकारों ने हिंदी रचनाओं का पाठ किया

24 जून, 2024 को अल्मोड़ा, साहित्य अकादमी के तत्त्वावधान में ग्राम बकस्वाड़, अल्मोड़ा में ग्रामलोक कार्यक्रम आयोजित हुआ, जिसमें साहित्यकार त्रिभुवन गिरी, डॉ. हयात राव, नवीन बिष्ट, विपिन जोशी, शंकर जोशी और डॉ. ललित चन्द्र जोशी ने अपनी हिंदी रचनाओं का पाठ किया।

इस कार्यक्रम के संयोजक और सदस्य परामर्श मंडल साहित्य अकादमी के प्रो. देव सिंह पोखरिया रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता त्रिभुवन गिरि महाराज ने की। मुख्य अतिथि के रूप में लमगड़ा ब्लॉक प्रमुख विक्रम सिंह बगडवाल मौजूद रहे। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. देव सिंह पोखरिया ने साहित्य अकादमी के कार्यक्रमों की सूचना दी। उन्होंने बताया कि ग्रामलोक कार्यक्रम भारतवर्ष के ग्रामों में आयोजित हो रहे हैं। ग्रामों में क्षेत्र के कवियों की रचनाओं का पाठ किया जा रहा है। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादमी, संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार के अंतर्गत ग्रामलोक कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर संचालन विपिन जोशी ने और आभार साहित्य अकादेमी के सदस्य प्रो. देव सिंह पोखरिया ने किया। ग्रामलोक कार्यक्रम में तमाम ग्रामीण उपस्थित रहे।

साभार : दैनिक उत्तर उजाला की रिपोर्ट

'रेत-समाधि' की दास्तानगोई ने रच दिया नया साहित्यिक अध्याय

गीतांजलि श्री के बुकर विजेता उपन्यास पर महमूद फ़ारुकी ने पेश की दास्तान

हिंदी साहित्य की बहुचर्चित कृति 'रेत-समाधि', जिसे बुकर पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है, अब दास्तानगोई के रंग में ढल गई है। 8 जून, 2024 को इंडिया हैबिटेट सेंटर में राजकमल प्रकाशन द्वारा आयोजित 'कृति उत्सव' के तहत मशहूर दास्तानगो महमूद फ़ारूकी और पूनम गिरधानी ने इस उपन्यास पर आधारित 'दास्तान-ए-रेत-समाधि' प्रस्तुत की। इस अनोखे आयोजन में साहित्य, कला और सिनेमा जगत की कई नामचीन हस्तियाँ जैसे लार्ड मेघनाद देसाई, शर्मिला टैगोर, विशाल भारद्वाज, अशोक वाजपेयी और सुधीर चंद्र मौजूद रहे। दास्तान की शुरुआत से पहले लेखिका गीतांजलि श्री ने कहा, "कहानी को बोलकर कहने का तरीका हमेशा से मुझे आकर्षित करता रहा है। महमूद फ़ारूकी जैसे कलाकार जब इसे प्रस्तुत करते हैं, तब यह उपन्यास एक नई साँस लेता है। यह प्रस्तुति रचनात्मकता की एक नई यात्रा है।"

दास्तानगो महमूद फ़ारूकी ने इसे अपने बीस वर्षों के दास्तानगोई करियर का सबसे चुनौतीपूर्ण काम बताया। उन्होंने कहा, " 'रेत-समाधि' को मंच पर उतारना आसान नहीं था। यह उपन्यास अपनी परतदार संरचना और गहराई के कारण अद्वितीय है। इसे दास्तान के रूप में ढालना एक ऐसी यात्रा रही, जिसमें हर क्षण कुछ नया सीखने को मिला।"

राजकमल प्रकाशन के प्रबंध निदेशक अशोक महेश्वरी ने कहा, "रेत-समाधि हमारे समय की एक महाभारतीय रचना है। यह केवल एक पारिवारिक कहानी नहीं, बल्कि समाज, साहित्य और संवेदनाओं का समग्र दस्तावेज़ है। पुरस्कारों से रचनाएँ महान नहीं होतीं, लेकिन वे ध्यान अवश्य खींचती हैं। इस कृति का अनुवाद दुनिया की प्रमुख भाषाओं में हो रहा है और इसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भरपूर सराहना मिली है।" 'दास्तान-ए-रेत-समाधि' न केवल उपन्यास की संवेदनाओं को मंच पर लाने का प्रयास है, बल्कि यह साहित्य और परंपरा के बीच एक सेतु भी बनाता है, जिसे पाठकों और श्रोताओं ने भरपूर सराहा।

साभार : राजकमल प्रकाशन समूह का फ़ेसबुक पेज

साहित्य मंच कार्यक्रम

21 मई, 2024 को भारत की प्रतिष्ठित साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादमी और भारत में लिथुआनिया गणराज्य के दूतावास के संयुक्त तत्त्वावधान में एक विशेष साहित्यिक मंच का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम नई दिल्ली स्थित अकादमी के सभागार, रवींद्र भवन में हुआ। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता थे लिथुआनिया के प्रख्यात विद्वान, प्रो. मिंडौगस क्विएटकॉस्कस, जो वर्तमान में विलनियस विश्वविद्यालय के भाषा एवं भाषाशास्त्र संकाय के अधिष्ठाता हैं। साथ ही वे लिथुआनिया के पूर्व संस्कृति मंत्री भी रह चुके हैं। उन्होंने 'बहुभाषिक एवं बहुसांस्कृतिक शहर तथा सांस्कृतिक/ऐतिहासिक स्मृतियाँ' विषय पर गहन व्याख्यान प्रस्तुत किया। अपने संबोधन में प्रो. क्विएटकॉस्कस ने विश्व के विभिन्न शहरों की सांस्कृतिक परतों, भाषाई विविधता और ऐतिहासिक स्मृतियों के संरक्षण पर प्रकाश डाला। उन्होंने उदाहरणों के माध्यम से बताया कि कैसे विभिन्न भाषाएँ और संस्कृतियाँ एक शहर की आत्मा को गढ़ती हैं और इतिहास को जीवंत बनाती हैं। उन्होंने यह भी रेखांकित किया कि साहित्य और संस्कृति के माध्यम से वैश्विक समुदायों के बीच सेतु कैसे निर्मित किए जा सकते हैं। कार्यक्रम में अनेक साहित्यकार, अनुवादक, शिक्षाविद्, शोधार्थी तथा दिल्ली स्थित विदेशी दूतावासों के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। व्याख्यान के पश्चात् श्रोताओं के साथ एक संवाद सत्र भी आयोजित किया गया, जिसमें प्रो. क्विएटकॉस्कस ने विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए। कार्यक्रम के अंत में अतिथियों ने आपसी संवाद और साहित्यिक चर्चाओं का आनंद लिया।

साभार : साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली की आधिकारिक वेबसाइट

शांतिनिकेतन में हुआ 'कैंपस कविता' का अनूठा आयोजन

6 मई, 2024 को विश्व-भारती विश्वविद्यालय, शांतिनिकेतन के हिंदी भवन, पश्चिम बंगाल में 'कैंपस कविता' का एक प्रेरणादायी और गरिमामय आयोजन सम्पन्न हुआ। हिंदी विभाग और रेख़्ता समूह के साहित्यिक मंच 'हिन्दवी' के संयुक्त तत्त्वावधान में आयोजित इस कार्यक्रम ने युवा प्रतिभाओं को एक सशक्त मंच प्रदान किया। कविता के प्रति घटते रुझान के इस दौर में कार्यक्रम में विद्यार्थियों की भागीदारी उत्साहजनक रही। आयोजन के लिए कुल 55 विद्यार्थियों ने अपनी स्वरचित कविताएँ प्रविष्ट कीं, जो अब तक के सभी कैंपस कविता आयोजनों में सर्वाधिक संख्या रही। यह प्रतियोगिता विशेष रूप से पश्चिम बंगाल के शिक्षण संस्थानों में पंजीकृत विद्यार्थियों के लिए आयोजित की गई थी। देश के विभिन्न कोनों, विशेषकर दार्जिलिंग और कोलकाता से आए युवा कवियों ने अपनी उपस्थिति से आयोजन को जीवंत कर दिया। सभी प्रविष्टियों में से 15 कविताओं का चयन मंच पर काव्य-पाठ के लिए किया गया। प्रतियोगिता का मूल्यांकन हिंदी जगत के तीन प्रतिष्ठित कवियों - विनय सौरभ, मनोज कुमार झा और सुधांशु फ़िरदौस ने किया। निर्णायकों के फैसले के अनुसार अमन त्रिपाठी को प्रथम पुरस्कार, सृष्टि रोशन को द्वितीय और रूपायण घोष को तृतीय पुरस्कार प्रदान किया गया। रोशन पाठक और कृष्णा नंदन को सांत्वना पुरस्कार से सम्मानित किया गया। दूसरे सत्र में निर्णायकों द्वारा प्रस्तुत कविताओं ने वातावरण को अत्यंत भावपूर्ण बना दिया।

साभार : रेड्डित.कॉम - WWW.REDDIT.COM

कविताओं पर आधारित श्रुति नाट्य प्रस्तुति 'यूँ ही साथ-साथ चलते' का मंचन

14 अप्रैल, 2024 को हिन्दुस्तानी भाषा अकादमी, नई दिल्ली के तत्त्वावधान में राजधानी के मुक्तधारा ऑडिटोरियम में एक अनोखे साहित्यिक और रंगमंचीय प्रयोग को साकार किया गया। प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ. सच्चिदानंद जोशी और मालविका जोशी द्वारा उनकी स्वयं की कविताओं पर आधारित श्रुति नाट्य प्रस्तुति 'यूँ ही साथ-साथ चलते' का मंचन दर्शकों के लिए एक अभूतपूर्व अनुभव बनकर सामने आया। यह प्रस्तुति अपने आप में एक नवाचारी प्रयोग थी, जिसमें एक दंपत्ति ने अपनी कविताओं को नाटकीय रूप देकर स्वयं अभिनय करते हुए मंच पर उतारा। यह प्रयोग न केवल साहित्य और रंगमंच के संगम का सजीव उदाहरण बना, बल्कि दर्शकों को एक गहरे भावनात्मक प्रवाह में भी बहा ले गया। नाटक के संवाद और दृश्य रचना ने प्रेम, जीवन की जद्दोजहद, संबंधों की बारीकियाँ, सपनों की उड़ान और यथार्थ की ठोस ज़मीन पर टिकी मानवीय अनुभूतियों को अत्यंत संवेदनशीलता से प्रस्तुत किया। जोशी दंपत्ति का सहज और प्रभावशाली अभिनय दर्शकों को अंत तक बाँधे रखने में सफल रहा। कई दृश्य इतने भावपूर्ण थे कि सभागार में निस्तब्धता छा गई। कार्यक्रम के दूसरे सत्र में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। अंत में, श्री सुधाकर पाठक ने धन्यवाद-ज्ञापन प्रस्तुत करते हुए भाषाई विविधता के संरक्षण और भावी पीढ़ी को सांस्कृतिक मूल्यों से जोड़ने की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने इस दिशा में सामूहिक प्रयासों की ज़रूरत बताते हुए इसे एक जन आंदोलन का रूप देने की अपील की।

साभार : हिंदुस्तानी भाषा अकादमी की आधिकारिक वेबसाइट

न्यू जर्सी में प्रयोग नाट्य उत्सव

11 मई, 2024 को ब्रूक आर्ट्स सेंटर, न्यू जर्सी में प्रयोग थिएटर ग्रुप द्वारा प्रयोग नाट्य उत्सव

का भव्य आयोजन किया गया। यह उत्सव पूर्णत: 'हिंदी नाटकों' को समर्पित रहा। इसके अंतर्गत 'अपने ही पुतले', 'नाटक नहीं' तथा 'बिरजिस कदर का कुनबा' नाटकों का मंचन हुआ। 'अपने ही पुतले' मानव मन और समाज की जटिल कार्यप्रणाली की पड़ताल करता है, जिसका लेखक श्री योगेश त्रिपाठी हैं और निदेशक श्री अमीय मेहता। श्री लक्ष्मीकांत वैष्णव द्वारा रचित एवं श्री अमीय मेहता द्वारा निर्देशित 'नाटक नहीं' समाज के प्रतिबिंबों पर एक हास्य, एक समय में एक व्यंग्यात्मक प्रहार है। 'बिरजिस कदर का कुनबा' नाटक महिला कलाकारों द्वारा चित्रित अनकही भावनाओं और इच्छाओं पर आधारित है, जिसे लिखा है फ़ेडेरिको गार्सिया लोर्का ने और निर्देशन श्री अमीय मेहता ने किया।

साभार : प्रयोग थिएटर ग्रुप का फ़ेसबुक पेज

आभासी कार्यक्रम
हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि

6 अप्रैल, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 12'** का आयोजन किया। डीपीएस अंतर्राष्ट्रीय, घाना के छात्र श्री प्रसन्ना चंदन खेड़े ने कबीरदास के दोहे का सस्वर वाचन किया, सोफ़िया विश्वविद्यालय और बल्गारिया की छात्रा, सुश्री लोरा मारिनोवा ने आशीष कंधवे की कविता 'कितने डरे हुए हैं हम' का हिंदी तथा बल्गारियन भाषा में सस्वर वाचन किया। घाना से आत्मानंद पांडेय ने बताया कि हिंदी के पाठ्यक्रम में व्यंग्य, दोहे-चौपाइयाँ, आलेख तथा समाचारपत्रों के संपादकीय सम्मिलित किए गए हैं। डॉ. मिलेना ब्रातोएवा ने सोफ़िया विश्वविद्यालय, बल्गारिया के भारती विद्या विभाग में हिंदी शिक्षण पर प्रकाश डालते हुए मुंशी प्रेमचंद, मुक्तिबोध, जयशंकर प्रसाद, अज्ञेय, कमलेश्वर, निर्मल वर्मा तथा मोहन राकेश जैसे साहित्यकारों की महत्त्वपूर्ण रचनाओं के पठन-पाठन पर बात की। कार्यक्रम की अध्यक्षा हिंदू कॉलिज, दिल्ली के सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफ़ेसर, डॉ. विजया सती ने स्पष्ट किया कि नाट्य मंचन, किस्से-कहानियों, फ़िल्मों आदि के माध्यम से साहित्य के प्रति अभिरुचि जगायी जा सकती है। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने परिचर्चा-सत्र का संचालन किया, उपमहासचिव शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद-ज्ञापन किया और वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर ने मंच-संचालन किया।

4 मई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **"हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि - भाग 13"** का आयोजन किया, जिसमें विएना विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रिया की छात्रा लुइसा मस्ज़नित्ज़ ने भीष्म साहनी द्वारा लिखित 'तमस' उपन्यास पर प्रस्तुति की, वेलिंग्टन हिंदी विद्यालय, न्यूज़ीलैंड से अनूषा यादव ने सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा रचित कविता 'झाँसी की रानी' का सस्वर वाचन किया और इंडो-ऑस्ट्रेलियन बाल भारती विद्यालय की छात्रा जया अग्रवाल ने गीतों से हिंदी साहित्य के समृद्ध होने पर बात की। डॉ. अलका चूडाल ने दक्षिण एशिया विभाग, ऑस्ट्रिया में बी.ए. हिंदी के पाठ्यक्रम पर प्रकाश डाला। डॉ. रमेश चंद शर्मा ने बताया कि वेलिंग्टन हिंदी विद्यालय, न्यूज़ीलैंड में बच्चों को स्वर, व्यंजन तथा मात्राएँ सिखाने के बाद बाल-गीत सिखाये जाते हैं और हिंदी कहानियाँ सुनाई जाती हैं। ऑस्ट्रेलिया से डॉ. कविता बृजमोहन सूद ने हिंदी पढ़ाते समय साहित्य और संस्कृति का संगम होने पर बल दिया।

अध्यक्षीय वक्तव्य में सीनियर प्रो. पूरनचंद टंडन ने विचार व्यक्त किया कि किसी भी भाषा का अगर पूर्णत: बोध अर्जित करना है, तो उसमें डूबना पहली शर्त है। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव डॉ. माधुरी रामधारी ने आरंभ में स्वागत-भाषण दिया और वरिष्ठ सहायक संपादक, श्री प्रकाश वीर ने धन्यवाद-ज्ञापन किया।

('हिंदी साहित्य के प्रति अभिरुचि' आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : https://www.youtube.com/@worldhindisecretariat पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

हिंदी में अभिव्यक्ति

20 अप्रैल, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 12'** का आयोजन किया। कार्यक्रम की शुरुआत विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत-भाषण से हुई। भारतीय सांस्कृतिक केंद्र/इंडो-आर्मेनिया फ्रेंडशिप एनजीओ से सुश्री नारिने मानुक्यान ने भारत-आर्मेनिया संबंधों पर अपने विचार व्यक्त किए। तंज़ानिया से सुश्री मुनीरा माचो युसुफ़ ने भारत के रीति-रिवाजों को समझने के लिए हिंदी को सशक्त माध्यम बताया और यूएसए से जोनाथन ओल्ड ने कहा कि हिंदी नए द्वार खोलती है। सुश्री गायाने नाजारयान ने उल्लेख किया कि आर्मेनिया में हिंदी भाषा की ज़रूरत पुलिस स्टेशनों तथा न्यायालयों में भी होने लगी है। तंज़ानिया से श्रीमती सविता अशोक मौर्य का कथन था कि अगर हिंदी का प्रचार-प्रसार करना है, तो उसे बोलचाल की भाषा के रूप में सिखाना उचित होगा। श्रीमती नोरा कोआ ने कहा कि कालिफ़ोर्निया विश्वविद्यालय, बर्कले में विद्यार्थी नौकरी के लिए नहीं, बल्कि बॉलीवुड फ़िल्में देखने तथा अपने पारिवारिक सदस्यों से संवाद के लिए हिंदी सीखते हैं। अंतर्राष्ट्रीय हिंदी समिति, अमेरिका तथा त्रैमासिक पत्रिका 'विश्वा' के

संपादक, श्री रमेश जोशी ने विचार रखा कि भाषा दो समाजों तथा दो संस्कृतियों के बीच संबंध मज़बूत बनाती है। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने धन्यवाद ज्ञापित किया तथा कार्यक्रम का संचालन श्री सोमदत्त काशीनाथ ने किया।

18 मई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय ने **'हिंदी में अभिव्यक्ति - भाग 13'** का आयोजन किया। विश्व हिंदी सचिवालय की महासचिव, डॉ. माधुरी रामधारी के स्वागत वक्तव्य से कार्यक्रम आरंभ हुआ। इसके उपरांत डीपीएस मॉडर्न इंडियन स्कूल, कतर की छात्रा लावांशी गर्ग ने हरिवंशराय बच्चन की रचनाओं पर प्रकाश डाला, वियतनामी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय, होचिमिन्ह के छात्र फ़न वू जुंग ने योग पर अपने विचार व्यक्त किए और मिशिगन राज्य विश्वविद्यालय, अमेरिका से जैक सेब्री ने तमिल और हिंदी की विशिष्टताओं पर टिप्पणी की। श्रीमती सुहेला मोहसिन ने डीपीएस मॉडर्न इंडियन स्कूल, कतर में हिंदी की गतिविधियों पर चर्चा की। श्रीमती साधना सक्सेना ने वियतनामी राष्ट्रीय विश्वविद्यालय में हिंदी की पढ़ाई एवं प्रतियोगिताओं पर बात की। अमेरिका से डॉ. राजीव रंजन ने कहा कि शोध बहुत ज़रूरी है और शोध के निष्कर्षों को दुनिया भर के शिक्षकों तक पहुँचाना भी ज़रूरी है। अध्यक्षीय वक्तव्य में स्वामी विवेकानंद सांस्कृतिक केंद्र, वियतनाम की निदेशिका, श्रीमती मोनिका शर्मा ने रेखांकित किया कि हिंदी जीवन संदर्भो से जुड़ी भाषा है और ज़रूरी है कि हिंदी जीवन की भाषा बनी रहे। विश्व हिंदी सचिवालय के उपमहासचिव, डॉ. शुभंकर मिश्र ने आभार-प्रदर्शन किया एवं वरिष्ठ सहायक संपादक श्री प्रकाश वीर ने मंच-संचालन किया।

('हिंदी में अभिव्यक्ति' आभासी कार्यक्रम के सभी संस्करण विश्व हिंदी सचिवालय के औपचारिक यूट्यूब चैनल : https://www.youtube.com/@worldhindisecretariat पर उपलब्ध हैं।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

साक्षात्कार

8 अप्रैल, 2024 को 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम के अंतर्गत एशियाई और ट्रांसकल्चरल अध्ययन संस्थान, विल्नियस विश्वविद्यालय, लिथुआनिया के सहायक प्रोफ़ेसर डॉ. क्रिस्तिना डोलिनिना का साक्षात्कार लिया गया। उन्होंने बताया – "मैं रशियन फ़िलोलॉजी की छात्रा थी, तो मुझे लगा कि जो भाषा मेरे देश में नहीं है, उसे सीखनी चाहिए। मैंने अनुभव किया कि हिंदी का स्वर संगीत की तरह है।" हिंदी साहित्य पर बात करते हुए डॉ. क्रिस्तिना ने कहा – "आधुनिक काल और भक्तिकाल के छायावादी कवियों में मेरी अधिक दिलचस्पी थी।" डॉ. क्रिस्तिना का मत है कि कला और भाषा मानवता के लिए ज़रूरी है। उन्होंने भाषा, नृत्य और संस्कृति को साधना की संज्ञा दी। श्रीमती कल्पना लालजी ने साक्षात्कार के लिए डॉ. क्रिस्तिना डोलिनिना का साधुवाद किया।

20 मई, 2024 को विश्व हिंदी सचिवालय के 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में भारतीय हिंदी रचनाकार डॉ. वीणा सिन्हा का साक्षात्कार लिया गया। चिकित्सक होते हुए भी वे हिंदी में निरंतर लेखन करती हैं। उनका कथन है कि समाज में जो कुछ घटित होता है, उसको देखने की अंतर्दृष्टि वह अपनी लेखनी के माध्यम से समाज के समक्ष प्रस्तुत करती है। अपने उपन्यास 'सपनों से बाहर' पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने बताया कि यह उपन्यास चिकित्सकों की जीवनचर्या पर आधारित है। इसमें चिकित्सकों के जीवन की कठिनाइयों का वर्णन है। कटु वास्तविकता के साथ तालमेल बिठाने का संघर्ष इस उपन्यास का प्रतिपाद्य विषय है। डॉ. वीणा सिन्हा का मत है कि उपन्यास में एक विस्तृत फलक होता है और इसके लेखन के लिए खोज और गहन अध्ययन की आवश्यकता पड़ती है। श्रीमती कल्पना लालजी ने साक्षात्कार के लिए डॉ. वीणा सिन्हा के प्रति आभार प्रकट किया।

17 जून, 2024 को 'क्षितिज' रेडियो कार्यक्रम में रवीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय, भोपाल के कुलाधिपति, श्री संतोष चौबे मुख्य अतिथि रहे। हिंदी साहित्य और विज्ञान के संबंध में अपना विचार प्रकट करते हुए उन्होंने कहा कि मनुष्य के जीवन को संतुलित बनाने के लिए वैज्ञानिक दृष्टिकोण जितना आवश्यक है, उतना ही साहित्य आवश्यक है। साहित्य और विज्ञान दोनों में ही जिज्ञासा और आश्चर्य का भाव समान रहता है। श्री अशोक चौबे ने निवेदन किया कि बड़े लेखकों की कविताओं को यदि युवाओं तक पहुँचाना है, तो उन्हें संगीत में ढालना है। व्यंग्य के संबंध में उनका दृष्टिकोण है कि व्यंग्य की अंतिम परिणति करुणा है। अर्थात् जिसपर व्यंग्य कर रहे हैं, उसके प्रति मन में करुणा का भाव पैदा होना चाहिए। इस साक्षात्कार के लिए डॉ. शशि दुकन ने श्री संतोष चौबे के प्रति धन्यवाद ज्ञापित किया।

(विभिन्न देशों के हिंदी विद्वानों के साक्षात्कार विश्व हिंदी सचिवालय की औपचारिक वेबसाइट https://vishwahindi.com/new/# के 'ओडिओ' भाग पर उपलब्ध है।)

विश्व हिंदी सचिवालय की रिपोर्ट

लोकार्पण

बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में पुस्तक-विमोचन

7 अप्रैल, 2024 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन, पटना में डॉ. राम रेखा सिंह रचित व्यंग्य कथा-संग्रह 'पुण्य की लूट' का विमोचन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए डॉ. अनिल सुलभ ने बताया कि पुस्तक में 31 व्यंग्य कथाएँ हैं, जिनमें पूरा समाज समाहित हो गया है। लेखक डॉ. राम रेखा सिंह ने राजनीति ही नहीं, धर्म सहित जीवन से जुड़े हर विषय से

व्यंग्य खींच निकाला है और उसे रोचक प्रतीकों और संवादों के माध्यम से प्रस्तुत किया है। इनके व्यंग्य में 'हास्य' स्वतःस्फूर्त होकर प्रस्फुटित होता है और पाठकों के मन को गुदगुदा जाता है। उन्होंने बताया कि साहित्य की सबसे कठिन विधा व्यंग्य है। वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. सीताराम सिंह 'प्रभंजन' ने पुस्तक की सविस्तार समीक्षा की और लेखक को व्यंग्य-साहित्य का महत्त्वपूर्ण हस्ताक्षर बताया। समारोह के मुख्य अतिथि और राज्य उपभोक्ता संरक्षण आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति संजय कुमार ने कहा कि लोकार्पित पुस्तक के लेखक एक चिकित्सा-विज्ञानी होते हुए भी साहित्य का सृजन कर रहे हैं, यह हिंदी के लिए बहुत शुभ है। इस अवसर पर लघुकथा-गोष्ठी भी आयोजित की गई। मंच का संचालन ब्रह्मानंद पाण्डेय ने तथा धन्यवाद-ज्ञापन कृष्ण रंजन सिंह ने किया।

28 अप्रैल, 2024 को बिहार हिंदी साहित्य सम्मेलन में जियालाल आर्य के उपन्यास 'सफ़ेद चादर' का लोकार्पण किया गया। बिहार विधान सभा के अध्यक्ष नंद किशोर यादव ने कहा कि लेखक जियालाल आर्य की लेखन शैली मोहित करती है। उनका उपन्यास 'सफ़ेद चादर' एक ऐसी रचना है, जिसे पढ़ना आरंभ करने के बाद समाप्त किए बिना छोड़ने का मन नहीं करता। डॉ. अनिल सुलभ ने कहा कि लोकार्पित पुस्तक के लेखक एक संवेदनशील और गहन सामाजिक-दृष्टि रखने वाले रचनाकार हैं। समारोह के विशिष्ट अतिथि और दूरदर्शन बिहार के कार्यक्रम-प्रमुख डॉ. राज कुमार नाहर, सम्मेलन के उपाध्यक्ष डॉ. शंकर प्रसाद, डॉ. मधु वर्मा, डॉ. ध्रुव कुमार तथा डॉ. मनोज गोवर्द्धनपुरी ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

साभार : आर.के.टीवीन्यूज़.कॉम / आई.नेक्स्टलाइव.कॉम

'हिंदी पत्रकारिता : भूमिका और समीक्षा' का लोकार्पण और उनकी कहानियों पर चर्चा

18 मई, 2024 को डॉ. सविता चड्ढा की सद्य प्रकाशित कृतियों के लोकार्पण एवं चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया गया। 'हिंदी पत्रकारिता : भूमिका एवं समीक्षा' का लोकार्पण पंजाब केसरी की चेयरपर्सन श्रीमती किरण चोपड़ा, श्री अनिल जोशी, श्री ऋषि कुमार शर्मा, डॉ. मुक्ता, श्री ओमप्रकाश प्रजापति एवं श्री मनमोहन शर्मा 'शरण' के कर कमलों द्वारा संपन्न हुआ।

लेखिका सविता चड्ढा ने सभी माननीय अतिथियों का हार्दिक अभिनंदन और स्वागत करते हुए कहा कि उनका लेखन उनके पाठकों और शुभचिंतकों के आशीर्वाद से ही संभव हो पाता है। उन्होंने अपने प्रकाशकों का भी आभार व्यक्त किया। श्रीमती किरण चोपड़ा ने लेखिका की विभिन्न विधाओं की पुस्तकों का उल्लेख करते हुए, लोकार्पित नई पुस्तक की विशेष रूप से सराहना की। श्री अनिल जोशी ने लेखिका के बहुआयामी व्यक्तित्व पर बात की और उनके द्वारा लिखी गई विभिन्न कृतियों की चर्चा की। हिंदी अकादमी के उपसचिव, श्री ऋषि कुमार शर्मा ने कहा "सविता चड्ढा जी ने विभिन्न विषयों पर अपनी लेखनी चलाई है। इनका कहानी-संग्रह 'नारी अंतर्वेदना की कहानियाँ' में एक सशक्त नारी का आधुनिक रूप निखर कर आया है। ये कहानियाँ कालजयी हैं, जो समाज की समस्या के ऊपर दृष्टिपात करके उनका समाधान भी देती हुई चलती है।"

डॉ. मुक्ता, डॉ. ओमप्रकाश प्रजापति एवं श्री मनमोहन शर्मा ने लेखिका के साहित्यिक सफर का उल्लेख करते हुए उनकी प्रकाशित विभिन्न पुस्तकों पर चर्चा की और "हिंदी पत्रकारिता : भूमिका और समीक्षा" को पत्रकारों और लेखकों के लिए उपयोगी बताया। 'नारी अस्मिता व अंतरवेदना की कहानियाँ' संग्रह पर डॉ. कल्पना पांडेय 'नवग्रह' ने कहा "सविता चड्ढा की कहानियाँ नारी सशक्तिकरण के लिए अंतरात्मा से उठी हुई वह आवाज़ है, जो न केवल एक दूरदृष्टि देती है, बल्कि संवेदनाओं के तार भी झंकृत करती है।" डॉ. पुष्पा सिंह बिसेन ने कहा सविता चड्ढा की शख्सियत, व्यक्तित्व और कृतित्व बहुत विशाल है। उन्होंने सभा को सूचित किया कि वे सविता चड्ढा के संपूर्ण व्यक्तित्व पर एक खंडकाव्य लिख रही हैं। उमंग सरीन ने कहानी 'बिब्बो', 'दिल्ली में भी है' और 'फ़िलिपिनो' पर अपने विचार प्रकट किए। शकुंतला मित्तल ने कहानियों पर कहा "नारी अन्तर्वेदना की कहानियाँ" वेदना और पीड़ा को झेलते हुए भी स्वाभिमान रखकर संघर्ष करती उन नारियों की कहानियाँ हैं, जो संघर्ष में ही समाधान खोज अपना जीवन मार्ग तलाशती हैं।

डॉ. कविता मल्होत्रा ने कहा "सविता जी की कहानियाँ महिला सशक्तिकरण का सकारात्मक पक्ष उजागर करती हैं।" श्री अमोद कुमार ने कहा कि सविता जी ने जहाँ नारी के भिन्न रिश्तों में हो रहे उत्पीड़न और उसके अंर्तमन की वेदना को अपनी कहानियों में उजागर किया है, वहीं नारी को संघर्षशील होकर अपने पैरों पर खड़े होकर स्वाभिमान का जीवन जीने की प्रेरणा भी दी है। डॉ. शुभ्रा ने संग्रह की कहानियों को पठनीय और समाजोपयोगी बताया। शारदा मित्र और आमोद कुमार ने कहानियों पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सविता चड्ढा की कहानियों को समाजोपयोगी बताया और इसमें नारी चेतना के विभिन्न स्वरों को प्रस्तुत करते हुए संग्रह की सभी कहानियों की व्याख्या प्रस्तुत की। रंजना मजूमदार ने सविता चड्डा की एक खूबसूरत गज़ल को स्वर देकर सभी को मंत्र मुग्ध कर दिया।

साभार : उत्कर्षमेल.कॉम – HTTPS://UTKARSHMAIL.COM/BLOG/DRSAVITA-CHADHA-JI/

'नेपाल में हिंदी : स्थिति और संभावनाएँ' का लोकार्पण

31 मई, 2024 को त्रिभुवन विश्वविद्यालय के सभागार में श्री विमलेश कांति वर्मा और डॉ. संजीता वर्मा के संयुक्त सम्पादन में प्रकाशित 'नेपाल में हिंदी : स्थिति और संभावनाएँ' का भव्य लोकार्पण और पुस्तक पर चर्चा का आयोजन हुआ। इस अवसर पर पुस्तक के लेखक मंडल के अनेक सदस्य, पत्रकार और हिंदी प्रेमी सभागार में उपस्थित थे। श्री विमलेश कांति वर्मा के अनुसार त्रिभुवन विश्वविद्यालय के उपकुलपति, प्रो. शिवलाल भुसाल ने पुस्तक के लिए 'शुभाशंसा' लिखी और भारतीय सांस्कृतिक सम्बन्ध परिषद्, नई दिल्ली के महानिदेशक, श्री कुमार तुहिन ने 'मंगल कामना' लिखकर पुस्तक के महत्त्व को रेखांकित किया। विभाग की अध्यक्ष, डॉ. संजीता वर्मा ने विभाग के सभी अध्यापकों के सहयोग का उल्लेख किया और उसी का परिणाम है कि 'नेपाल में हिंदी : स्थिति और संभावनाएँ' जैसी पुस्तक का प्रणयन संभव हो सका।

विश्वविद्यालय के उपकुलपति डॉ. केशर जंग बराल, पूर्व उपकुलपति डॉ. शिवलाल भुसाल तथा नेपाली विभाग के अध्यक्ष डॉ. कृष्ण न्यौपाने, संस्कृत विभाग के अध्यक्ष डॉ. माधव प्रसाद उपाध्याय तथा हिंदी विभाग की अध्यक्ष डॉ. संजीता वर्मा, पद्मकन्या परिसर के डॉ. फणीन्द्र राज निरौला, नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान के अनुवाद विभाग की प्रमुख सुश्री हंसावती कुर्मी और त्रिभुवन विश्वविद्यालय के पुस्तकालयाध्यक्ष समारोह में उपस्थित थे।

साभार : श्री विमलेश कांति वर्मा का फ़ेसबुक पेज

सम्मान

फ्रांस में 'भारत गौरव सम्मान' से सम्मानित श्री संतोष चौबे

5 जून, 2024 को लक्ज़ेमबर्ग पैलेस, फ्रांस सीनेट, पेरिस में अंतर्राष्ट्रीय संस्कृति युवा संस्थान, जयपुर द्वारा भव्य सम्मान-समारोह का आयोजन किया गया। समारोह में साहित्य, कला, संस्कृति, शिक्षा और सामाजिक क्षेत्र में पाँच दशकों से निरंतर सक्रिय रहते हुए वैश्विक फलक पर विशिष्ट उपलब्धियाँ हासिल करने के फलस्वरूप विश्व रंग के निदेशक एवं रबीन्द्रनाथ टैगोर विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री संतोष चौबे को प्रतिष्ठित अंतर्राष्ट्रीय 'भारत गौरव सम्मान 2024' से अलंकृत किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि फ्रांस सीनेट के उपसभापति श्री डोमिनिक थेफिल, सीनेट सदस्य श्री फ्रेडरिक बुवाल, फ्रांस में भारत के काउंसलेट जनरल, श्री प्रवीण कुमार मिश्रा एवं महंत डॉ. नरेश पुरी गोस्वामी महाराज रहे। श्री डोमिनिक थेफिल ने अपने संबोधन में कहा कि पूरे विश्व में भारतीयों का दबदबा है और हर क्षेत्र में भारतीय कार्य कर रहे हैं। समारोह की अध्यक्षता करते हुए संस्कृति युवा संस्था के अंतर्राष्ट्रीय अध्यक्ष पं. सुरेश मिश्रा ने कहा कि हमें तय करना है कि हम अपने देश की माटी से इस प्रकार जुड़े रहें कि हमारा अपनापन और भारतीयता लगातार आगे बढ़े। भारतीय दूतावास के अधिकारी श्री प्रवीण कुमार ने कहा कि अब भारतीय पूरे विश्व में अपनी धाक जमा रहे हैं। जब भी हम भारतीयों से मिलते हैं, तो अपनापन महसूस करते हैं। फ़िल्म निर्माता एवं निदेशक श्री अन्नू कपूर, यू.के. के गुरुजी राजराजेश्वर, माण्ड गायिका बेगम बतूल ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

संस्कृति युवा संस्था के फ्रांस चैप्टर के चेयरमैन अनवर हुसैन एवं संस्कृति युवा संस्था के प्रदेश अध्यक्ष गौरव धामाणी ने बताया कि गुरु दाजी कमलेश डी पटेल, श्री अन्नू कपूर, डॉ. सुधीर शाह, बेगम बतूल, मनोज त्यागी, डॉ. सतीश कुमार जैन, एचएच राजराजेश्वर गुरुजी, मनीषा त्रिपाठी, अरुण योगीराज सहित कई प्रसिद्द लोगों को भारत गौरव अवार्ड से सम्मानित किया गया।

उल्लेखनीय है कि 'भारत गौरव सम्मान' अपने विशिष्ट कार्यों से विश्व भर में अपना अप्रतिम स्थान प्राप्त करने वाले भारतीयों को प्रदान किया जाता है। इससे पूर्व यह सम्मान भारत के विश्व प्रसिद्ध व्यक्तित्व श्री श्री रविशंकर, नोबेल शांति पुरस्कार विजेता श्री कैलाश सत्यार्थी, पद्मभूषण श्री विश्वमोहन भट्ट आदि को प्रदान किया जा चुका है।

साभार : स्कोप ग्लोबल स्किल्स यूनिवर्सिटी की वेबसाइट /यूनीवार्ता

प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी को 'साहित्य वाचस्पति सम्मान'

23 जून, 2024 को केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा के निदेशक प्रो. सुनील बाबुराव कुलकर्णी को हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रतिष्ठित 'साहित्य वाचस्पति सम्मान' से विभूषित किया गया। हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयागराज द्वारा केंद्रीय विश्वविद्यालय कोरापुट (उड़ीसा) में आयोजित 75वें राष्ट्रीय अधिवेशन के दौरान साहित्य सम्मेलन प्रयाग के प्रधानमंत्री श्री कुंतक मिश्र तथा साहित्य मंत्री प्रो. रामकिशोर के करकमलों द्वारा प्रो. कुलकर्णी को सम्मान देकर गौरवान्वित किया गया। इस मौके पर प्रो. आर.एस. सर्राजु तथा केंद्रीय विश्वविद्यालय उड़ीसा के कुलपति प्रो. चक्रधर त्रिपाठी उपस्थित रहे। उल्लेखनीय है कि आज़ादी के पहले से ही हिंदी के प्रचार-प्रसार में जिन संस्थाओं ने महती भूमिका निभाई, उनमें हिंदी साहित्य सम्मेलन का नाम अग्रणी रहा है। महात्मा गांधी, पंडित मदनमोहन मालवीय, डॉ. राजेन्द्र प्रसाद, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, साहित्यकार बद्रीनारायण चौधरी प्रेमधन, बाबू श्याम सुंदर दास, अयोध्या सिंह उपाध्याय हरिऔध, माखनलाल चतुर्वेदी जैसे अनेक महापुरुषों की विरासत से समृद्ध संस्था द्वारा प्रो. कुलकर्णी को सम्मानित किए जाने से संस्थान कर्मियों ने हर्ष प्रकट करते हुए इसे

निदेशक महोदय के साथ-साथ संस्थान की प्रतिष्ठा में 'चार चांद' लगना बताया है।

साभार : केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा की आधिकारिक वेबसाइट

हिंदी लेखक गौरव पांडेय समेत 23 लेखकों को भाषाओं में प्रतिष्ठित युवा पुरस्कार

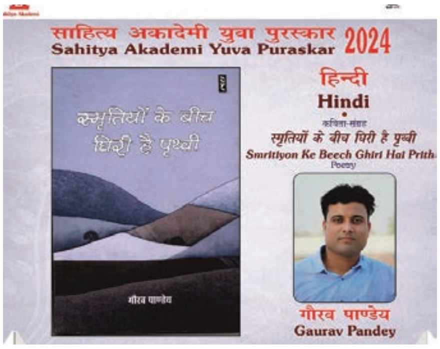

15 जून, 2024 को साहित्य अकादमी ने हिंदी लेखक गौरव पांडेय समेत 23 लेखकों को भाषाओं में प्रतिष्ठित युवा पुरस्कार देने की घोषणा की। इसके साथ ही बाल साहित्य पुरस्कार के लिए अकादमी द्वारा देवेन्द्र कुमार के बच्चों की कहानियों के संग्रह '51 बाल कहानियाँ' का चयन किया गया है।

इन चयनित लेखकों को भाषाओं में प्रतिष्ठित 'युवा पुरस्कार' से सम्मानित किया जाएगा। साहित्य अकादमी ने स्पष्ट किया है कि उसके कार्यकारी बोर्ड की बैठक माधव कौशिक की अध्यक्षता में हुई । इस बैठक में युवा पुरस्कार के लिए 23 लेखकों के चयन को स्वीकृति दी गई। संबंधित भाषा में तीन-तीन सदस्यों वाले चयन मंडल द्वारा की गई सिफ़ारिशों के आधार पर और नियमों एवं प्रक्रिया के अनुसार इन लेखकों का चयन किया गया है। युवा पुरस्कार 10 कविता-संग्रहों एवं सात लघुकथा-संग्रहों के साथ-साथ दो लेख और एक निबंध-संग्रह, एक उपन्यास, एक ग़ज़ल पुस्तक और एक संस्मरण के लिए प्रदान किया गया है। गौरव पांडेय को उनके कविता-संग्रह 'स्मृतियों के बीच घिरी है पृथ्वी' के लिए सम्मानित किया जाएगा।

साभार : टीवी9भारतवर्ष

श्रद्धांजलि

मालती जोशी

15 मई, 2024 को पद्मश्री से अलंकृत लोकप्रिय कथाकार मालती जोशी का निधन हो गया। वे 90 वर्ष की थीं। पचास से अधिक हिंदी और मराठी कथा-संग्रहों की लेखिका मालती जोशी, शिवानी के बाद हिंदी की सबसे लोकप्रिय कथाकार मानी जाती हैं। उनके साहित्य पर देश के कई विश्वविद्यालयों में शोध कार्य हुए हैं।

4 जून, 1934 को महाराष्ट्र के औरंगाबाद शहर के एक मध्यवर्गीय मराठी परिवार में उनका जन्म हुआ था। वे किशोरावस्था से ही लेखन कार्य करने लगी थीं। उनके लेखन की शुरुआत कविता से हुई। अपनी आत्मकथा में उन दिनों को याद करते हुए उन्होंने लिखा है- "मुझमें तब कविता के अंकुर फूटने लगे थे।" उनकी कहानी कहने की शैली ने देश भर के कई विश्वविद्यालयों में उनके साहित्यिक कार्यों पर किए गए शोध से उन्हें एक विशिष्ट पहचान दिलाई। उनको 2018 में तत्कालीन राष्ट्रपति रामनाथ कोविंद ने पद्मश्री से सम्मानित किया था। उन्होंने हिंदी और मराठी भाषा में 60 से अधिक किताबों का लेखन किया है।

साभार : अमरउजाला.कॉम / जागरण.कॉम

डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ

24 मई, 2024 को मॉरीशस के प्रसिद्ध हिंदी साहित्यकार डॉ. इंद्रदेव भोला इंद्रनाथ का निधन हुआ। वे हिंदी अध्यापक, सरकारी स्कूल में डिप्यूटी हेड टीचर, आर्य सभा मॉरीशस में निरीक्षक-परीक्षक, प्रांतीय रांपार आर्य समाज के संस्थापक एवं प्रधान, प्रेस और प्रकाशन समिति, आर्य सभा मॉरीशस के मंत्री, हिंदी लेखक संघ, मॉरीशस के महामंत्री व मान्य प्रधान, 'विद्या भवन' के संस्थापक, संचालक व शिक्षक, 'सृजन' एवं 'बाल सखा' पत्रिकाओं के प्रधान संपादक एवं साप्ताहिक रेडियो कार्यक्रम 'गीत गरिमा' के प्रस्तुतकर्ता रहे।

'प्रतिध्वनियाँ', 'आर्य समाज और हिंदी विश्व संदर्भ', 'विदेशों में हिंदी तथा मॉरीशस हिंदी साहित्य की पृष्ठभूमि में हिंदी लेखक संघ की भूमिका', 'आज की हिंदी' पाठ्यपुस्तक, 'वरदान' कविता-संग्रह आदि आपकी प्रमुख रचनाएँ हैं। भारत, फ़िजी तथा नॉर्वे की 15 से अधिक पत्रिकाओं जैसे 'आज कल', 'धर्मयुग', 'गगनांचल', 'बाल भारती', 'युवक', 'वीणा', 'सार्वदेशिक', 'शान्ति दूत' आदि में उनकी कहानियाँ, कविताएँ तथा लेख छप चुके हैं। मॉरीशस सरकार, विश्व हिंदी सचिवालय, सनातन धर्म टेम्पल्स फ़ेडेरेशंस, आर्य सभा, हिंदी प्रचारिणी सभा, हिंदी लेखक संघ तथा हिंदी सेवा संस्थान द्वारा आपको सम्मानित किया गया है।

विश्व हिंदी सचिवालय

विश्व हिंदी सचिवालय तथा समस्त हिंदी जगत की ओर से पुण्यात्माओं को भावभीनी श्रद्धांजलि।

प्रधान संपादक : डॉ. माधुरी रामधारी
संपादक : डॉ. शुभंकर मिश्र
वरिष्ठ सहायक संपादक : श्री प्रकाश वीर
सहायक संपादक : श्रीमती श्रद्धांजलि हजगैबी-बिहारी
पता : विश्व हिंदी सचिवालय, इंडिपेंडेंस स्ट्रीट, फ़ेनिक्स 73423, मॉरीशस
World Hindi Secretariat, Independence Street, Phoenix 73423, Mauritius
फ़ोन : (230) 660 0800
ई-मेल : info@vishwahindi.com
वेबसाइट : www.vishwahindi.com
डेटाबेस : www.vishwahindidb.com
फ़ेसबुक : www.facebook.com/groups/vishwahindisachivalay/
ट्विटर : @WHSMauritius
इंस्टाग्राम : WHS_08

संपादकीय

हिंदी भाषा और रामकथा

हमारी भाषा हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी संस्कृति, पहचान और परंपराओं का वह सजीव ध्वज है, जो हर दिल में बसी है और हर विचार में गूँजती है । इसके प्रचार-प्रसार से न केवल भारत में, बल्कि विश्व के हर हिस्से में भारतीयता का संदेश फैलता है। हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हम सबका उद्देश्य है। इस संदर्भ में यह आवश्यक है कि हम उन सांस्कृतिक ग्रंथों की चर्चा करें, जो हिंदी भाषा और साहित्य के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। ये ग्रंथ न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण हैं, बल्कि समाज, संस्कृति और भाषा के संवर्धन में भी योगदान देते हैं।

रामकथा भारतीय संस्कृति की एक अमूल्य धरोहर है, जो न केवल धार्मिक दृष्टिकोण से महत्त्वपूर्ण है, बल्कि भारतीय समाज, संस्कृति और भाषा को भी एक नई दिशा दी है। यह भारतीय लोकसंस्कृति, धार्मिक चेतना और आत्मिक अनुशासन का एक प्रकाशस्तंभ है, जिसने न केवल भारतभूमि को आलोकित किया, बल्कि प्रवासी समाज के मन-प्राण को भी दिशा दी है। हिंदी भाषा के संदर्भ में यदि बात करूँ, तो रामकथा ने हिंदी के प्रचार-प्रसार में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह केवल धार्मिक कथा नहीं, बल्कि समाज और संस्कृतियों के बीच संवाद स्थापित करने का सशक्त माध्यम भी है। तुलसीदास के 'रामचरितमानस' ने हिंदी को न केवल साहित्यिक भाषा के रूप में, बल्कि एक सांस्कृतिक और सामाजिक भाषा के रूप में भी स्थापित किया।

तुलसीदास ने संस्कृत के गूढ़ ज्ञान को जनभाषा में प्रस्तुत करके हिंदी को एक धार्मिक तथा सामाजिक-भाषिक मंच प्रदान किया। ध्यान रहे कि यह वह काल था, जब हिंदी, विशेषतः अवधी और ब्रज रूपों में, केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति की भाषा ही नहीं थी, बल्कि लोकसंवाद, नीति-उपदेश और सांस्कृतिक अनुकरण का प्रभावशाली उपकरण भी थी।। तुलसीदास की भाषा में संस्कृत की गंभीरता, अपभ्रंश की लोच और लोक-बोलियों की लयात्मकता का अद्वितीय संगम था, जिसने हिंदी के विकास को व्यापक आधार प्रदान किया।

विदित ही है कि रामकथा का प्रभाव केवल भारतीय उपमहाद्वीप तक सीमित नहीं रहा। 19वीं शताब्दी में जब भारतीय प्रवासी समाज दुनिया के विभिन्न हिस्सों में फैलने लगा, तो उन्होंने साथ में रामचरितमानस और हिंदी को भी अपनी यात्रा में शामिल किया। इससे हिंदी का प्रसार दुनिया भर में विशेष रूप से मॉरीशस, फ़िजी, गयाना और अन्य देशों में हुआ। उन प्रवासियों के बीच तुलसीदास की 'रामचरितमानस' की पंक्तियाँ उनके दैनिक जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई थीं। जब वे खेतों में अथक श्रम करते थे या अकेलेपन और अपमान की पीड़ा झेलते थे, तब मानस की चौपाइयाँ उन्हें ऊर्जा और आत्म-संयम का संदेश देती थीं। कई मज़दूरों के पास रामचरितमानस की हस्तलिखित प्रतियाँ भी थीं, जो पीढ़ियों तक उनके घरों की सबसे पवित्र निधि के रूप में संरक्षित रहीं। इस प्रकार रामकथा के माध्यम से गिरमिटिया देशों के भारतीय मूल के लोगों ने अपनी सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखा। साथ ही साथ इससे न केवल वे अपनी जड़ों से जुड़े रहे, बल्कि हिंदी को एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में भी प्रतिष्ठित किया।

जहाँ तक पश्चिमी देशों में रामकथा की उपस्थिति का प्रश्न है तो यह संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों में बसे प्रवासी भारतीय समुदायों की भी पहली पसंद रही । यहाँ उन्होंने मंदिरों या विभिन्न वैयक्तिक व औपचारिक प्रयत्नों के माध्यम से अपने जीवन में रामकथा की निरंतरता को बनाए रखा। विभिन्न शैक्षिक, सांस्कृतिक और साहित्यिक मंचों पर रामायण आधारित प्रस्तुतियों, कार्यशालाओं और संगोष्ठियों का आयोजन कर वे अपनी नई पीढ़ी को निरंतर इससे जोड़ने का प्रयास करते रहे । यह हमारे लिए अत्यंत गर्व की बात है कि रामकथा और हिंदी का अंतर्संवाद अब न केवल भारत में, बल्कि पूरी दुनिया में व्याप्त है।

यह उल्लेखनीय है कि रामकथा का प्रभाव न केवल धार्मिक और सांस्कृतिक स्तर पर पड़ा, बल्कि इसने हमारे समाज में सामाजिक चेतना और नैतिक मूल्यों के प्रसार में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। तुलसीदास का 'रामचरितमानस' केवल एक धार्मिक काव्य नहीं है, बल्कि यह जीवन की नैतिकता, आदर्श और मर्यादा का गहरा संदेश प्रस्तुत करता है, जिसे पूरे भारतीय समाज ने अपनी जीवनशैली में आत्मसात कर लिया है।

रामकथा के भाषाई रूपांतरों ने भी परोक्ष रूप से इसके वैश्विक प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इंडोनेशिया में जावानी भाषा में रामायण का काव्य संस्करण 'काकाविन', थाईलैंड में थाई भाषा में 'रामाकिएन', कंबोडिया में ख्मेर भाषा में 'रीअमकेर', और फ़िजी तथा कैरेबियन देशों में भोजपुरी के साथ डच या अंग्रेज़ी के मिश्रण में रामकथा का प्रसार हुआ है। यह तथ्य इस बात को दर्शाता है कि रामकथा की सार्वभौमिकता उसकी स्थानीयता में रचने-बसने की क्षमता से उत्पन्न होती है। यह केवल एक भाषांतर नहीं, बल्कि विभिन्न संस्कृतियों में संस्कृति का पुनर्सृजन है।

आज के डिजिटल युग में भी रामकथा और हिंदी का सह-संवर्धन जारी है। सोशल मीडिया, यूट्यूब और अन्य डिजिटल प्लेटफ़ॉर्मो के माध्यम से रामकथा का प्रसार केवल धार्मिक संदर्भ में ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक और भाषिक संवाद के रूप में भी हो रहा है। रामकथा के शाश्वत आदर्शों और शिक्षाओं को इन मंचों के माध्यम से अब पूरी दुनिया में साझा किया जा रहा है, जिससे हिंदी को एक सशक्त और वैश्विक पहचान मिल रही है।

शैक्षिक स्तर पर भी रामकथा का महत्त्व कम नहीं है। स्कूल और कॉलेजों में हिंदी साहित्य के पाठ्यक्रमों में 'रामचरितमानस' पर आधारित पढ़ा व गुना जाता रहा है। विश्वविद्यालय स्तर पर इंडोलॉजी और भारतीय साहित्य विषयों के अंतर्गत रामकथा के साहित्यिक, दार्शनिक और भाषाई आयामों पर निरंतर शोध कार्य चल रहे हैं। यह भारतीय सांस्कृतिक प्रभाव की निरंतरता को बखूबी स्पष्ट करता है।

निस्संदेह, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले सांस्कृतिक ग्रंथों में रामकथा- 'रामचरितमानस' एक अमूल्य धरोहर है। इस ग्रंथ के माध्यम से हिंदी ने न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी अपनी पहचान बनाई है। विशेष रूप से उन देशों में, जहाँ भारतीय प्रवासी रहते हैं, रामकथा के माध्यम से हिंदी ने एक सांस्कृतिक और भाषिक कड़ी के रूप में अपनी प्रासंगिकता स्थापित की है।

आप सभी पाठकों और भाषा अभियानियों से यह अपेक्षा है कि हम पूरी एकजुटता से इसी उत्साह के साथ हिंदी की सेवा में लगे रहें और विभिन्न सांस्कृतिक-सामाजिक प्रसंगों के माध्यम से हिंदी भाषा और साहित्य को बढ़ावा देते रहें। हमें विश्वास है कि इस प्रकार के प्रयासों से हिंदी न केवल भारत में, बल्कि विश्वभर में अपनी उपयोगिता बनाए रखेगी तथा भाषा और संस्कृति के मध्य संवाद का यह सूत्र इसी प्रकार अबाध गति से चलता रहेगा। **अस्तु, मङ्गलम् भूयात्!**

भवदीय
डॉ. शुभंकर मिश्र
उपमहासचिव